ध्यानोदय

भूमण्डल एक नए दिव्य युग में प्रवेश कर रहा हैं। सभी लोग दो भागों में बँटते जा रहे हैं। मूर्ख आस्तिक और मूर्ख-नास्तिक लोग एक ओर तथा सच्चे योगी दूसरी ओर जा रहे हैं। प्रथम वर्ग के लोग सच्चाई को अभी दूर ही रखना चाहते हैं जबकि दूसरे वर्ग के लोग सच्चाई में डूब रहे हैं।

पहले वर्ग के लोग सिर्फ भौतिक शास्त्र ओर भौतिकता पर निर्भर है परन्तु दूसरे वर्ग के लाग आत्मज्ञान के धुरन्धर हैं। वर्तमान समय में दूसरे वर्ग के लोग बढ़ रहे हैं क्योंकि हर जगह ध्यानोदय हो रहा है।

सभी जगह पूजा-पाठ और प्रार्थना का महत्ता घट रहा है और उसकी जगह ध्यान-ज्ञान साधनाएँ उत्पन्न हो रही हैं। वर्तमान में लोग ईश्वर के अस्तित्व में नहीं बल्कि आत्मा की विद्यमानता में अधिक आस्था रखते हैं। यह ज्ञान लोगों में बढ़ रहा है। 'अहं ब्रह्मास्मि' जैसे वेदसार को अधिकांश ध्यानी अनुभव में ला रहे ह।

दिव्ययुग का यह एक नया प्रभात है। भूमंडल एक नए तेजोमय, अद्‌भुत फोटान अंतरिक्ष की कक्षा में प्रवेश कर रहा है। हम सब इस महान ध्यान उषोदय के लिए मिल कर आह्‌वान करेंगे। यह ध्यानोदय समस्त पिरामिड ध्यानियों का संयुक्त कार्यक्रम है।

प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में ध्यानादय होना चाहिए और ध्यान शक्ति भरनी चाहिए। हम सब ध्यान स्वयं भी करेंगे और दूसरों से भी करवाएँगे। ध्यानोदय होने से ही दिव्य स्वास्थ्य, समस्त सौभाग्य और कल्याण की प्राप्ति होगी।

ध्यानोदय का स्वागत है। ध्यान सूर्योदय का सुस्वागत है।